

---

# Dvijaprokta Darshanoparanta Shiva Stuti 2

द्विजप्रोक्ता दर्शनोपरान्त शिवस्तुतिः २

## Document Information

---

Text title : Dvijaprokta Darshanoparanta Shiva Stuti 2

File name : dvijaproktaDarshanoparAntashivastutiH2.itx

Category : shiva, shivarahasya, stuti

Location : doc\_shiva

Proofread by : Ruma Dewan

Description/comments : shrIshivarahasyam | ugrAkhyah saptamAMshaH | adhyAyaH 25|

vAvRittasholkAH||

Latest update : June 16, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

June 22, 2024

*sanskritdocuments.org*

---

---

## Dvijaprokta Darshanoparanta Shiva Stuti 2

---

### द्विजप्रोक्ता दर्शनोपरान्त शिवस्तुतिः २

---



(शिवरुद्रस्थान्तर्गते उग्राप्ये)

--

तदानीं श्रीमहादेवः करुणासागरः प्रभुः ।  
आविरासीद्भृषारुढः शिवाश्विष्टवपुः शिवः ॥ ८० ॥  
शशाम शीतलो जातः प्रवज्वन्नपि पावकः ।  
स ददर्श ततः शम्भुं नानाप्रमथसेवितम् ॥ ८१ ॥  
उमासंश्लिष्टवामाङ्गं वृषभाङ्गमव्ययम् ।  
सोमसूर्याग्निनयनं सोमार्धकृतशेखरम् ॥ ८२ ॥  
अभयप्रदमीशानं येडितानमञ्जं विभुम् ।  
अनन्तयन्द्रप्रतिममनन्तरविसन्निभम् ॥ ८३ ॥  
अनन्तवह्निप्रतिमं वस्तुतोऽप्रतिमं शिवम् ।  
अतिसुन्दरमीशानमभेयगुणसंश्रयम् ॥ ८४ ॥  
मन्दारमालासंवीतं वृन्दारकगणार्चितम् ।  
येतादृशं शिवं दृष्ट्वा प्रहृष्टहृद्यो द्विजः ॥ ८५ ॥  
मूर्धन्यञ्जलिमाधाय प्राङ् शम्भुं शिवार्यकः ॥ ८६ ॥

--

द्विजः उवाच -  
दानपात्रमण्डं शम्भो दानकालोऽयमीश्वर ।  
दाता त्वन्नेतरो याय्यो याय्या भक्तिस्त्वयि प्रभो ॥ ८७ ॥  
न याये न याये महादेव शम्भो  
वरानन्यदेवानलं भक्तभन्धो ।  
परन्त्येकुरुपां मदन्यैरलभ्यां  
भवद्भक्तिमेकां परामीश याये ॥ १०० ॥

यथैवेश भक्त्या तृणीकृत्य सर्वा-  
 नुपेन्द्राद्विदेवानलं सर्वथापि ।  
 त्वदर्यापरो नित्यमव्यग्रचित्तो  
 निरातङ्गमेवं भवन्तं भजामि ॥ १०१ ॥

तवैतत्पदद्वन्द्वमिन्द्रादिवन्द्यं  
 सद्योपेन्द्रलुत्पङ्कजाङ्गमीड्यम् ।  
 ममापि स्फुरवीश लुत्पद्ममध्ये  
 मुकुन्दाक्षिपद्मार्चितं वेदवेद्यम् ॥ १०२ ॥

महादेव विश्वेश विश्वैकवन्द्य  
 स्मरारे पुरारे महापातकारे ।  
 मडेशेति नामामृतं त्वत्प्रसादा-  
 त्पिबत्वन्वलं साधु जिह्वा ममैषा ॥ १०३ ॥

विभो देव देवेश गौरीश शम्भो  
 यमारे गजारे भवारेऽन्धकारे ।  
 शिवेशेति नानामृतं त्वत्प्रसादा-  
 त्पिबत्वन्वलं साधु जिह्वा ममैषा ॥ १०४ ॥

उमाकान्त मौनेन्द्रविश्रामलेतो  
 जगज्जुवनानन्दधर्मैसेतो ।  
 निरीडेति नामामृतं त्वत्प्रसादा-  
 त्पिबत्वन्वलं साधु जिह्वा ममैषा ॥ १०५ ॥

निराकार निर्लिप्त यन्द्रार्धमौले  
 मुकुन्दाद्विवृन्दारकाराध्यमूर्ते ।  
 परेशेति नामामृतं त्वत्प्रसादा-  
 त्पिबत्वन्वलं साधु जिह्वा ममैषा ॥ १०६ ॥

मुनिस्वान्तपद्मप्रभोघैकभानो  
 स्फुरत्भालभागीत्यलीलाङ्गशानो ।  
 गिरीशेति नामामृतं त्वत्प्रसादा-  
 त्पिबत्वन्वलं साधु जिह्वा ममैषा ॥ १०७ ॥

गुणातीत कल्याणानागुणाब्धे

वृषाधीशकेतो मडापुण्यडेतो ।  
सुरेशेति नामामृतं त्वत्प्रसादा-  
त्पिबत्वन्वदं साधु जिह्वा ममैपा ॥ १०८ ॥

कृपापात्र यन्द्रानलोष्पांशुनेत्र  
स्वभक्तैकमित्राद्रिकन्याकवत्र ।  
उमेशेति नामामृतं त्वत्प्रसादा-  
त्पिबत्वन्वदं साधु जिह्वा ममैपा ॥ १०९ ॥

शिव श्रीपतिस्वच्छनेत्रारविन्द-  
स्फुरत्पादपद्मामितानन्तभोग ।  
कृपाब्धेति (गिरीशेति) नामामृतं त्वत्प्रसादा-  
त्पिबत्वन्वदं साधु जिह्वा ममैपा ॥ ११० ॥

उरामेय निर्द्वन्द्व वेदान्तवेद्य  
त्रिशूलिन्नुमाकान्त कर्पूरगौर ।  
निरागेति नामामृतं त्वत्प्रसादा-  
त्पिबत्वन्वदं साधु जिह्वा ममैपा ॥ १११ ॥


॥ इति शिवरउस्थान्तर्गते द्विजप्रोक्ता दर्शनोपरान्त शिवस्तुतिः २ सम्पूर्णा ॥


- ॥ श्रीशिवरउस्थम् । उग्राप्यः सप्तमांशः । अध्यायः २५ । वापृत्तश्लोकाः ॥

- .. shrIshivarahasyam . ugrAkhyah saptamAMshaH . adhyAyaH 25 . vAvRRittashlokAH..

Proofread by Ruma Dewan

---

——  
*Dvijaprokta Darshanoparanta Shiva Stuti 2*  
pdf was typeset on June 22, 2024

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

